विषय :- यहाँ एक नदी बहती थी।

107

यहाँ एक नदी बहती थी।

27!

कहाँ है वो सरस्वती?
पानी से भरी नदी।
यहाँ भी एक नदी थी
इस गाँव का देवदा थी वो

मछली खेलनेवाली नदी।
ठंडा पानी देनेवाली नदी
सुबह में सूरज की सहेली
चाँद के साथ खेलेंगा रात में।

उसको क्या हुआ....
मनुष्य के काम से चली
गयी वो.....
स्वार्थ मानव का काम से।

हे भगवान! ये लोग कब
सीखेंगा...

कोई पुस्तक सीखने से भल
नहीं हैं।
प्रकृति को जानना हैं।
उसके साथ जीना हैं।
उसे जानते जीना हैं।

हमारा जन्म का मतलब हैं क्या?
इस संसार को जानना हैं।

उस नदी हमारे प्यास को
करती थी दूर।
खेलते थी उस में।
नहाना भी उस में थी।

आनेवाली पीढियाँ तो क्या करेंगा?
उसको ये सब कैसे मिलेंगा?
ये सब देखने केलिए कहाँ जाना होगा?
पानी में खेलने केलिए आज
जाना है शहर में।

आज सबकुछ बदल गया।
देश, संस्कार, प्रकृति सब